रीठा - बीज एवं रोपणी तकनीक

प्रजाति का नाम- रीठा, सैफोनट
वानस्पतिक नाम- सेपिन्डिस ट्रायफोलिएटस

परिचय

यह सेपिन्डैसी कुल का पर्णपाती वृक्ष है।

पहचान

यह वृक्ष अपनी खुरदुरी चमकती धूसर छाल एवं पंख नुमा पत्ति के कारण पहचाना जाता है। इस वृक्ष की लंबाई 15 से 18 मीटर एवं गोलाई 1 से 1.5 मीटर तक होती है। इसके फूल सफेद रंग के होते हैं।

प्राप्ति स्थान

सामान्यतः रीठा भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप में पाया जाता है। इसके साथ ही यह दक्षिण भारत के खुले जंगलों में कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है। पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं बिहार में भी कहीं–कही यह पाया जाता है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

इस वृक्ष की वृद्धि के लिए किसी विशेष प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता नहीं होती है। यह क्षारीय एवं अम्लीय दोमट बलुई मिट्टी में अच्छी तरह से वृद्धि करता है।

बीज वक

इसमें एक वर्ष के अंतराल पर अच्छा बीज उत्पादित होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

इस वृक्ष में फूल अक्टूबर से दिसंबर एवं फल फरवरी से अप्रैल के मध्य लगते हैं। बीज का संग्रहण माह अप्रैल में किया जाता है।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रति किलो बीज की संख्या 2000 से 2500 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

सामान्य भण्डारण में बीज की जीवन क्षमता अवधि 1 वर्ष तक होती है।

सुसुप्तावस्था

इसके बीजों में किसी भी तरह की सुसुप्तावस्था नहीं पायी जाती है।

अंकुरण क्षमता

अनुपचारित बीज में सामान्य स्थिति में बीज में अंकुरण क्षमता 60 से 70 प्रतिशत तक होती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशत 80 से 90 प्रतिशत तक होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

वायु रोधी प्लास्टिक जार में भण्डारित करने पर बीज की जीवन क्षमता 02 वर्ष तक बढाई जा सकती है।

उपयोगिता की अवधि

बीजों को संग्रहण के पश्चात् 03 से 18 माह के अवधि के अंदर उपयोग किया जाना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

बीज को बुवाई के पूर्व जिब्रेलिन एसिड (GA_3 200 PPM) घोल में 10 मिनिट तक भिगाने के पश्चात् बुवाई करने पर बीज में अंकुरण 80 से 90 प्रतिशत प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

अधिक अंकुरण प्राप्त करने हेतु बीज की बुवाई बारीक रेत एवं कापू मिट्टी को 1:2 के अनुपात में मिला कर करना चाहिए।

बुआई का समय

बीज की बुआई मई से जून माह के मध्य किया जाना चाहिए।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 150 से 200 ग्राम बीज की आवश्यकता होगी।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

बीज को रोपणी में बुवाई के लिए क्यारी के स्थान पर जर्मिनेशन ट्रे का प्रयोग करना चाहिए। जिसमें बारीक महीन रेत के साथ काप्रू मिट्टी को 1:2 के अनुपात में मिलाकर 02 से.मी. की गहराई में बीज की बुवाई कर बीज से बीज की दूरी 02 से.मी. रखना चाहिए। बुवाई पूर्व बीज को ऊपर दी हुई विधि से उपचारित कर ही प्रयोग में लाना चाहिए जिससे अधिक अंकुरण प्राप्त हो सके। बुवाई के पश्चात् दिन में एक बार सिंचाई करना अत्यंत आवश्यक होता है। जर्मिनेशन ट्रे में एक माह के पौधे होने के पश्चात् ही पॉलिथिन बैग में स्थानांतरण करना अच्छा होता है।

रोपणी अवस्था में बीमारी एवं बचाव

रोपणी अवस्था में कीट का प्रकोप कम ही देखने को मिलता है परंतु यदि इस तरह का प्रकोप दिखता है तो सप्ताह में एक बार नीम की पत्ती के घोल का छिड़काव करना उचित होता है।

पॉटिंग मिश्रण

पौध की अच्छी वृद्धि के लिए पॉलीथिन में रेत + मिट्टी + केंचुआ खाद को क्रमशः (1:1:2) लेकर मिश्रण तैयार किया जाना चाहिए।

पॉलीथिन का माप

रोपण हेतु पॉलिथिन का माप 15x25 सेमी. होना चाहिए।

उपयोग

यह वृक्ष औषधीय एवं व्यवसायिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी होता है। इसके फल का प्रयोग अपमार्जक (डिटर्जेंट), शैम्पू तैयार करने में किया जाता है। इसके साथ ही आभूषण साफ करने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसके फल एवं बीज का प्रयोग डायरिया, पेट से संबंधित बीमारी, लकवा एवं फेंफड़े आदि की औषधी तैयार करने में भी किया जाता है। इसकी जड़ एवं छाल का प्रयोग कफ एवं श्वसन तंत्र के नियंत्रित करने की लिए उपयोग किया जाता है।

अन्य

यह व्यवसायिक एवं औषधीय दृष्टि से अत्यंत उपयोगी होने के कारण इस प्रजाति का वृक्षारोपण वृहद् स्तर पर किया जाना चाहिए क्योंकि यह खुले जंगलों में काफी कम मात्रा में पायी जाती है।

संपर्क :

डॉ. अर्चना शर्मा

वरि. वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

फोन: (0761) 2666529, 2665540

Amrit Offset # 0761-2413943

50

रीठा
बीज एवं रोपणी तकनीक

(सेपिन्डिस ट्रायफोलिएटस)

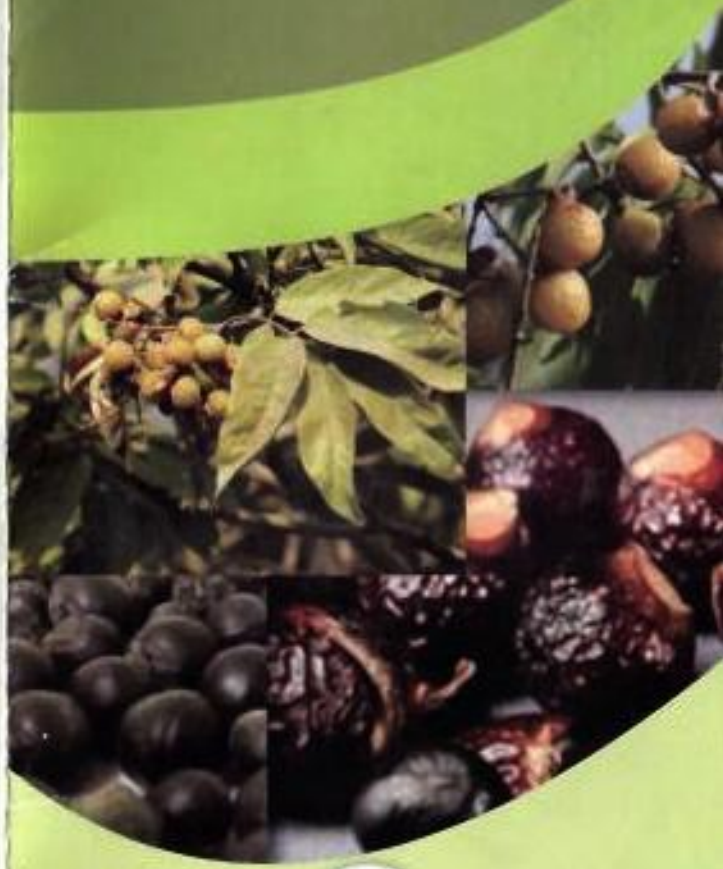

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org